HIN3B18a_cours-10-2013-04-11-कमलेश्वर

हिन्दी लेखक कमलेश्वर (६ जनवरी १९३२ - २७ जनवरी २००७) बीसवीं शती के सशक्त लेखकों में गिने जाते हैं। कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता, स्तंभ-लेखन, फिल्म-पटकथा जैसी अनेक विधाओं में उन्होंने अपनी लेखन-प्रतिभा का परिचय दिया है। कमलेश्वर का लेखन केवल गंभीर साहित्य से ही नहीं जुड़ा रहा। उनके लेखन के कई तरह के रंग देखने को मिलते हैं। उनका उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' बहुत सफल रहा। 'आंधी' नामक फिल्म में कमलेश्वर ने भारतीय राजनीति के चेहरे को पर्दाफाश किया है। उन्होंने मुंबई में जो टीवी पत्रकारिता की वो बेहद मायने रखती है। 'कामगार विश्व' नाम के कार्यक्रम में उन्होंने ग़रीबों, और मज़दूरों की पीड़ा तथा उनकी दुनिया को अपनी आवाज़ दी।

उन्होंने १९५४ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. किया। उन्होंने फिल्मों के लिए पटकथाएँ तो लिखी ही, उनके उपन्यासों पर फिल्में भी बनी। कमलेश्वर ने `आँधी', 'मौसम (फिल्म)', 'सारा आकाश', 'रजनीगंधा', 'छोटी सी बात', 'मिस्टर नटवरलाल', 'सौतन', 'लैला', 'रामबलराम' की पटकथाएँ लिखीं। लोकप्रिय टीवी सीरियल 'चन्द्रकांता' के अलावा 'दर्पण' और 'एक कहानी' जैसे धारावाहिकों की पटकथा लिखने वाले भी कमलेश्वर ही थे। उन्होंने कई वृतचित्रों और कार्यक्रमों का निर्देशन भी किया।

१९९५ में कमलेश्वर को 'पद्मभूषण' पुरस्कार दिया गया। २००३ में उन्हें 'कितने पाकिस्तान'(उपन्यास) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे 'सारिका' 'धर्मयुग', 'जागरण' और 'दैनिक भास्कर' जैसे प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं के संपादक भी रहे। उन्होंने दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक जैसा महत्वपूर्ण दायित्व भी निभाया। कमलेश्वर ने अपने ७५ साल के जीवन में १२ उपन्यास, १७ कहानी संग्रह, और क़रीब १०० फ़िल्मों की पटकथाएँ लिखीं।

वे नयी कहानी आन्दोलन के सशक्त हस्ताक्षर थे। साहित्य, पत्रकारिता तथा फिल्म जगत से समान रूप से जुड़े प्रगतिशील रचनाकार कमलेश्वर की आत्मकथा तीन खंड़ों में प्रकाशित है – 'जो मैंने जिया', 'यादों के चिराग', 'जलती हुई नदी'।